कुछ कर गुजरने की चाह

– सरोज बाला सेमवाल

कोविड के दौर में प्रकृति, मानवता और संघर्ष के कई आयाम व उदाहरण देखने समझने को मिले। प्रकृति मानो नहाकर स्वच्छ हो गयी। सूरज की साफ रोशनी, हरियाली, ऑक्सीजन की मात्रा का बढ़ना, धरती में पानी की बढ़ोत्तरी होना, प्रदूषण की मात्रा में कमी जैसे अनुभव प्राप्त हुए।

कोविड के दौर में प्रकृति, मानवता और संघर्ष के कई आयाम व उदाहरण देखने समझने को मिले। प्रकृति मानो नहाकर स्वच्छ हो गयी। सूरज की साफ रोशनी, हरियाली, ऑक्सीजन की मात्रा का बढ़ना, धरती में पानी की बढ़ोत्तरी होना, प्रदूषण की मात्रा में कमी जैसे अनुभव प्राप्त हुए। दौड़ती भागती जिन्दगी में ठहराव दिखाई दिया। एक ओर जहां परिवार के साथ वक्त बिताने से लेकर एक–दूसरे का मनोबल बढ़ाने जैसी भावनायें दिखाई दी वहीं दूसरी ओर ठिठुरन पैदा कर देने वाले अनुभव भी मिले। जिसमें रोजमर्रा के कामों से जूझते और घर से दूर रह रहे देश के एक बड़े वर्ग की महसूस न की जा सकने वाली बेबसी, दर्द और अनचाही छटपटाहट भी शामिल थी।

टिहरी गढ़वाल के नरेन्द्रनगर ब्लॉक में प्रकृति के अंचल में स्थित भैंसारों गांव में बच्चों में पढ़ने लिखने की निरन्तरता को बनाये रखने और समुदाय के साथ और अधिक निकटता स्थापित करने में यह दौर सहायक सिद्ध हुआ। गांव से विभिन्न कामों से बाहर रह रहे ग्रामीणों के वापस आने पर उनसे मिलना भी सम्भव हुआ। अभिभावकों और ऑनलाइन रूप से जुड़ाव बनाये रखने और विद्यालय के प्यारे छात्र/छात्राओं से नाता कायम रखने के लिए अभिभावकों के साथ मिलकर एक वाट्सएप ग्रुप बना दिया। हमारे छात्रों का जो हमसे लगाव है उसे शब्दों में बयां करना सम्भव नहीं है। बच्चों से लगातार फोन पर सम्पर्क बनाये रखा। बच्चे नित फोन करते और जहां पर भी उन्हें कुछ भी पूछना हो वे बेझिझक मेरे सम्मुख अपनी बातों को लेकर चर्चा करते। वे अपनी भावनाओं को बयां करते। सबसे ज्यादा तो स्कूल कब खुलेंगे मैडम जी इसी सवाल पर रहते। हमें स्कूल में अच्छा लगता है, घर में मेरा मन भी नहीं लगता। आंखों के सामने सारा मंजर घूम जाता। बच्चों के खिलखिलाते चेहरे और स्कूली प्रक्रिया से

फोटोः अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन

जुड़े सारे पहलू रह–रह कर याद आने लगते। घर पर रहते हुए मैं भी अब उकता गयी थी। रोज के रूटीन में काफी परिवर्तन हो गया था। बच्चों के मासूम चेहरों का ध्यान आता। कुछ बच्चों की तो पारिवारिक स्थिति भी बहुत बुरी है। स्कूल में बच्चे सभी के साथ प्रसन्न रहते थे। मुझे भी कहां चैन पड़ना था। मैं भी पांच–छः दिन में विद्यालय का चक्कर लगाने लगी। गांव वालों से मिलना–जुलना, उनके सम्पर्क में आने से सामजिक दूरी भी कम हुई। अपनत्व की भावना का विकास हुआ। डिजिटल का खूब सारा इस्तेमाल भी सीखने को मिला। इस दौरान एक यह एहसास भी हुआ कि समाज में स्कूल की और स्कूल में समाज की भूमिका व शिक्षक का उत्तरदायित्व समाज में कितनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

जीवन में कभी भी नौकरी के साथ–साथ इतना अधिक

समय घर परिवार के साथ बिताने का मौका नहीं मिला था। समय के साथ–साथ मैं हमेशा से अपने में परिवर्तन करती आई हूं और यह मेरे व्यवहार का एक हिस्सा बन चुका है। परिवर्तन से आशय अपने आप को बेहतर बनाने से है। भयावह परिस्थितियों से निपटने का भरपूर प्रयास करती हूं। घर–परिवार की जिम्मेदारी निभाने के साथ–साथ शिक्षक होने के एहसास को बनाये रखा। अनिश्चितता के इस दौर में बच्चों से जुड़े महत्त्वपूर्ण कामों में व्हाट्सएप ग्रुप का पुनर्निर्माण करना, बच्चों को यू–ट्यूब से कहानी, कविता और वीडियो क्लिप भेजना, प्रतिदिन अभिभावकों से अपडेट लेना, बच्चों की सहायता करना, मिशन शिक्षण संवाद और अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन की टीम द्वारा तैयार की गयी वर्कशीट का उपयोग करना, वर्कशीट पर बच्चों का मार्गदर्शन करना, बच्चों को कहानी–कविता–चित्र आदि बनाने व मौलिक सृजन करने का अवसर देना, दैनिक योग, प्रणायाम से जुड़ी गतिविधियों में भी निरन्तरता बनाने जैसे कामों में स्वयं को व्यस्त रखा। जुलाई में भी जब विद्यालय खुलने के आसार नहीं नजर आये तो विभाग द्वारा अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के सहयोग से ऑफलाइन मोड में साप्ताहिक वर्कशीट भी बच्चों तक पहुंचाने का मजेदार काम करने का अवसर मिला। इस अवसर का जैसे मुझे कबसे इन्तजार था। इससे न केवल बच्चों से निरन्तरता में जुड़ाव बनाने में आसानी हुई बल्कि गाँव के प्रधान जी समेत बच्चों के माता–पिता से भी जुड़ी रही। सभी बच्चों ने बड़े उत्साह से दिए गये कामों को किया और निरन्तर अपनी प्रतिक्रिया भी दी। बच्चे ऑनलाइन क्विज प्रतियोगिताओं में भी बढ़–चढ़कर उत्साहित होकर हिस्सा लेने लगे। संचार और प्रौद्यौगिकी के मामले में सभी अभिभावक व बच्चों ने सक्रियता से सीखने का प्रयास किया और काफी हद तक सभी सफल भी होते रहे। इस दौरान मिशन शिक्षण संवाद द्वारा त्रैमासिक परीक्षा का भी ऑनलाइन संचालन किया गया, जिसमें सभी छात्रों ने बढ़–चढ़ कर प्रतिभाग किया। लॉकडाउन की इस अवधि का मैंने सदुपयोग किया। घर परिवार की जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हुए, बहुत से शैक्षणिक ग्रुपों के साथ मिलकर सक्रियता से कार्य कर रही हूं।

कोविड के दौरान मैंने अपने क्षमता संवर्धन के लिए खुद से किया हुआ वादा (अब अगर लौटी तो बेहतर लौटूंगी) पूरी करने की कोशिश की। इस दौरान मिशन शिक्षण संवाद, नवोदय क्रांति और अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन ने लॉकडाउन के समय का सदुपयोग करने का सुनहरा अवसर प्रदान किया। मैं अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन से विगत पांच–छः वर्षों से जुड़ी हुई हूं, जिसमें शिक्षा को सरलता, सुगमता, रोचकता और मनोरंजक तरीके से कैसे पहुंचाया जा सकता है, इससे जानने समझने का निरंतर अवसर मिलता रहता है। इस दौर में भी अज़ीम प्रेमजी फांउडेशन हम जैसे अध्यापकों के लिए मील का पत्थर साबित हुआ, जिसके सानिध्य में सीखने–सिखाने के क्रम में मैंने भाषा की कई कार्यशालाओं में प्रतिभाग किया। जिसमें लेखन का कौशल, कविता शिक्षण, कहानी शिक्षण, डायरी लेखन आदि का अच्छा अनुभव प्राप्त हुआ। फाउंडेशन द्वारा आयोजित वेबिनारों में प्रतिभाग कर विद्वानों के सम्पर्क में आने का मौका मिला। उन्हें सुनने, समझने और अनुश्रवण करने की प्रेरणा मिली। आई.सी.टी. और योग कार्यशाला में प्रतिभाग करने का अवसर मिशन शिक्षण से मिला। इसके साथ ही नवोदय क्रांति परिवार की क्विज प्रतियोगिताओं ने भी खुद की क्षमता को समझने का अवसर दिया। लॉकडाउन की अवधि और अभी तक बन्द विद्यालयों को गतिमान बनाये रखने के कई प्रकार के साधनों से रू–ब–रू होने का मौका मिला। ऑनलाइन शिक्षण टीएलएम ग्रुप के साथियों द्वारा बनाये गये प्रेजेंटेशन का भी लाभ मिला, जिसका छात्र/छात्राओं ने भी लाभ उठाया। इस अवधि में मैंने भी सीखे गये ज्ञान का भरपूर उपयोग किया। बच्चों की समझ के स्तर अनुसार वर्कशीट निर्माण कर अपने छात्रों तक पहुंचाई। समय–समय पर घर–घर जाकर सम्पर्क कर छात्रों, अभिभावकों व अध्यापकों के बीच एक दूसरे से जुड़ने को प्रेरित करना भी शामिल रहा। ऑनलाइन शिक्षण के साथ–साथ मई से कोविड ड्यूटी विभागीय ELEM कार्यक्रम के अंतर्गत हिन्दी कार्यशाला के साथ–साथ विद्यालय सम्बन्धित सभी जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हुए अपने सीखने–समझने की क्षमता को और बेहतर बना रही हूं।

(लेखिका राजकीय प्राथमिक विद्यालय भैंस्यारो, नरेन्द्रनगर, टिहरी गढ़वाल में प्रधानाध्यापिका हैं)